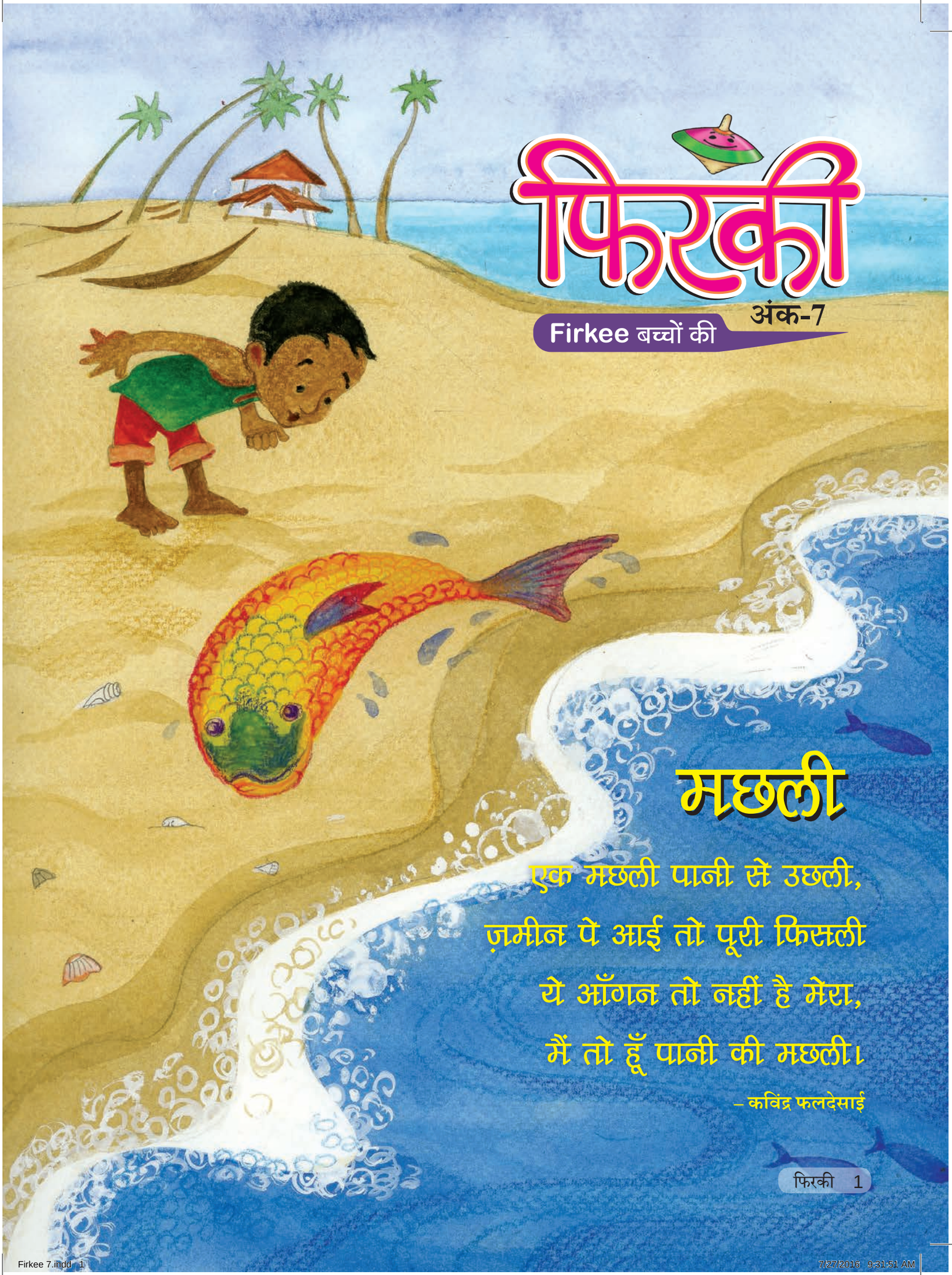

मछली

एक मछली पानी से उछली,
ज़मीन पे आई तो पूरी फिसली
ये आँगन तो नहीं है मेरा,
मैं तो हूँ पानी की मछली।

– कविंद्र फलदेसाई

Firkee 7.indd 1 7/27/2016 9:31:51 AM

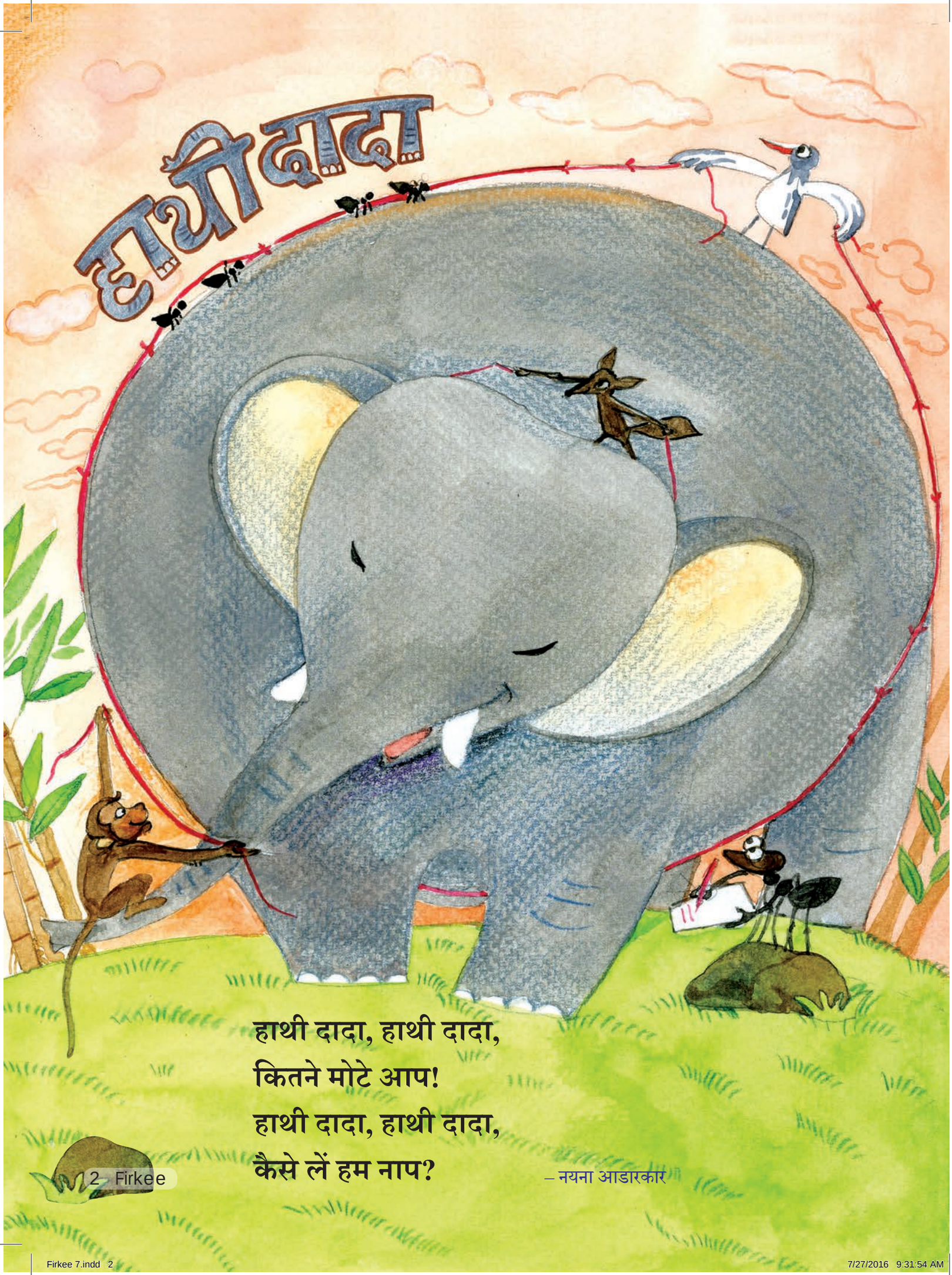

हाथी दादा, हाथी दादा,
कितने मोटे आप!
हाथी दादा, हाथी दादा,
कैसे लें हम नाप?

– नयना आडारकार

Firkee 7.indd 2 7/27/2016 9:31:54 AM

इस अंक में

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	चित्रांकन	पृष्ठ-संख्या
1	मछली	कविंद्र फलदेसाई	तापोशी घोषाल	1
2	हाथी दादा	नयना आडारकार	तापोशी घोषाल	2
3	आलू की सड़क	चंदन यादव	मिष्टुनी	4
4	Mirror	Adapted by Varada M.Nikalje	Taposhi Ghoshal	7
5	चित्र हमारे, शब्द तुम्हारे	–	–	8
6	पानी की फूल	प्रभात	तापोशी घोषाल	9
7	'अ' से आम	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	मिष्टुनी	10
8	Riddle	–	Taposhi Ghoshal	11
9	Sea	–	Taposhi Ghoshal	12
10	What if...	–	Mistunee	14
11	कुछ हम लिखें, कुछ तुम लिखो!	मुकेश मालवीय	तापोशी घोषाल	15
12	समुद्र किनारे...	–	–	16
13	Madan and Tomba found a new thing	Adapted	Taposhi Ghoshal	18
14	मक्खी	नयना आडारकार	तापोशी घोषाल	21
15	तीन खरगोश	–	तापोशी घोषाल	22
16	देखो, मैंने क्या बनाया !	–	–	24

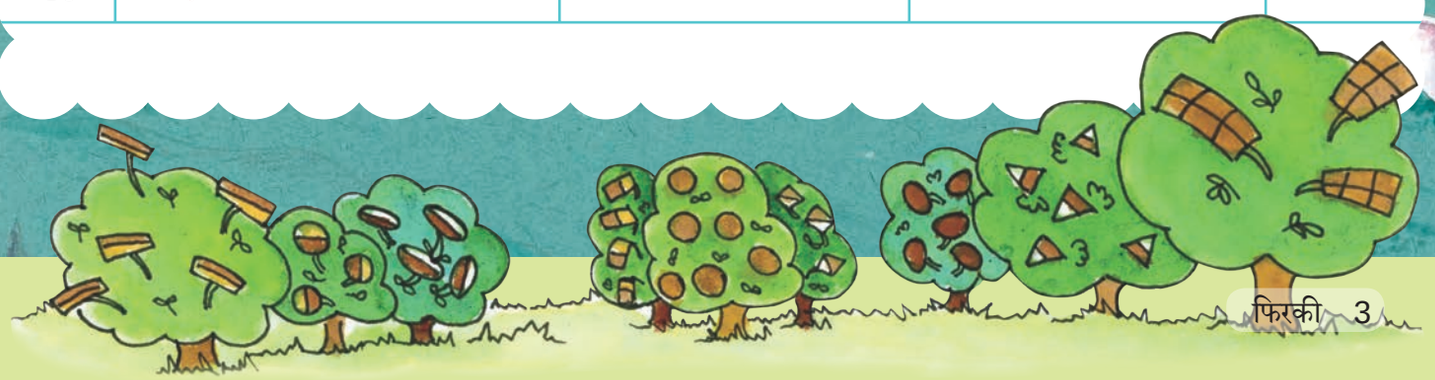

Firkee 7.indd 3 7/27/2016 9:31:56 AM

आलू की सड़क

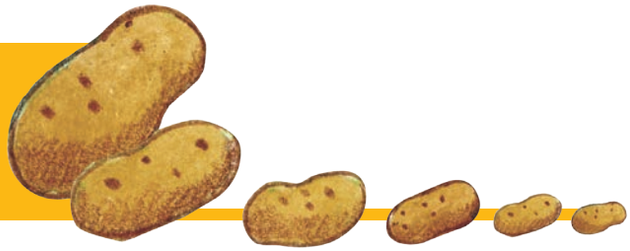

एक भालू था। उसे नानी के घर दूर जाना था।
रास्ते में भूख लगती तो भालू ने बोरा भर आलू पीठ पर रख लिए।

पर बोरे में तो छेद था।
भालू आगे बढ़ता जाता - धप्प, धप्प, धप्प।
बोरे से आलू टपकते जाते - टप्प, टप्प, टप्प।

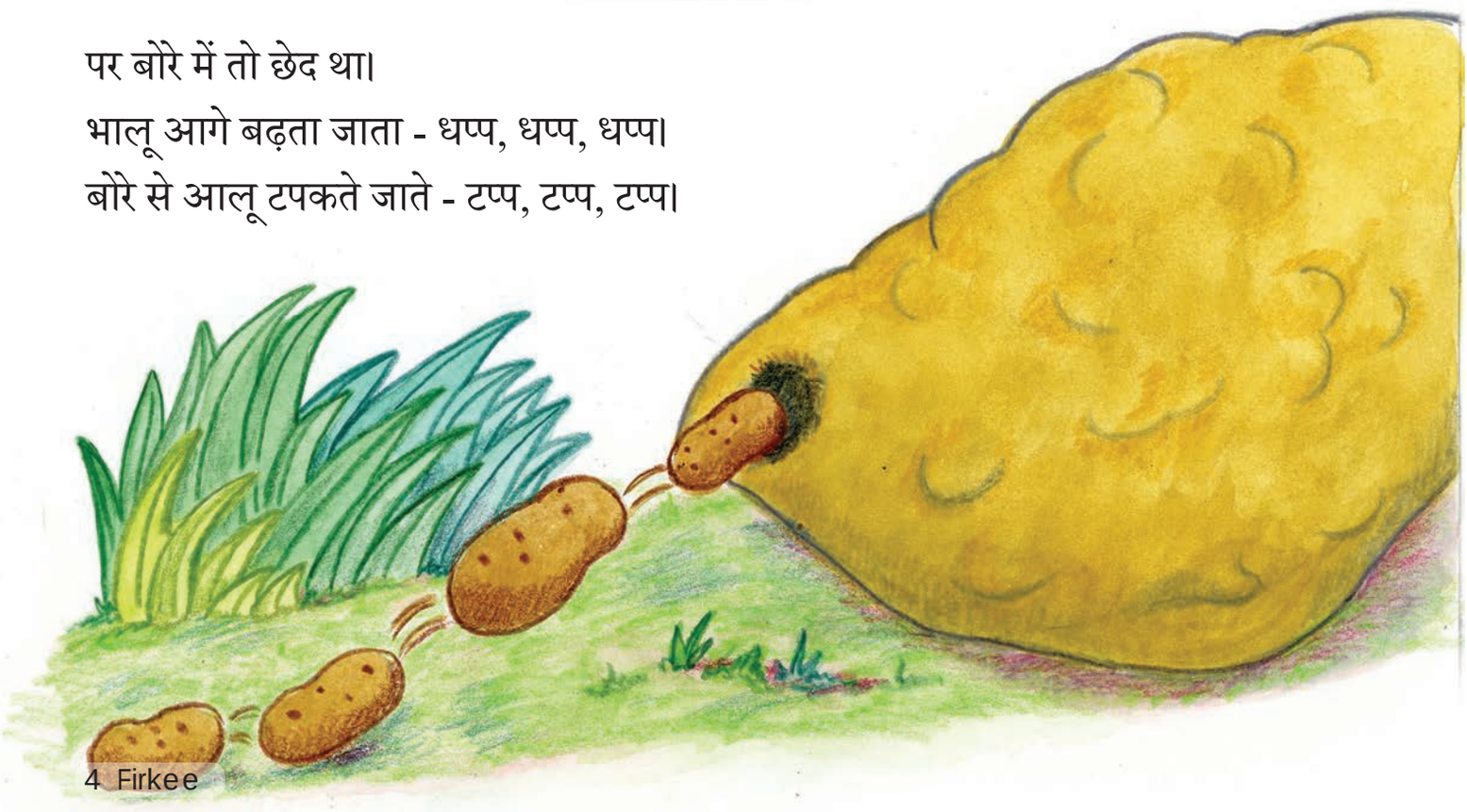

Firkee 7.indd 4 7/27/2016 9:31:59 AM

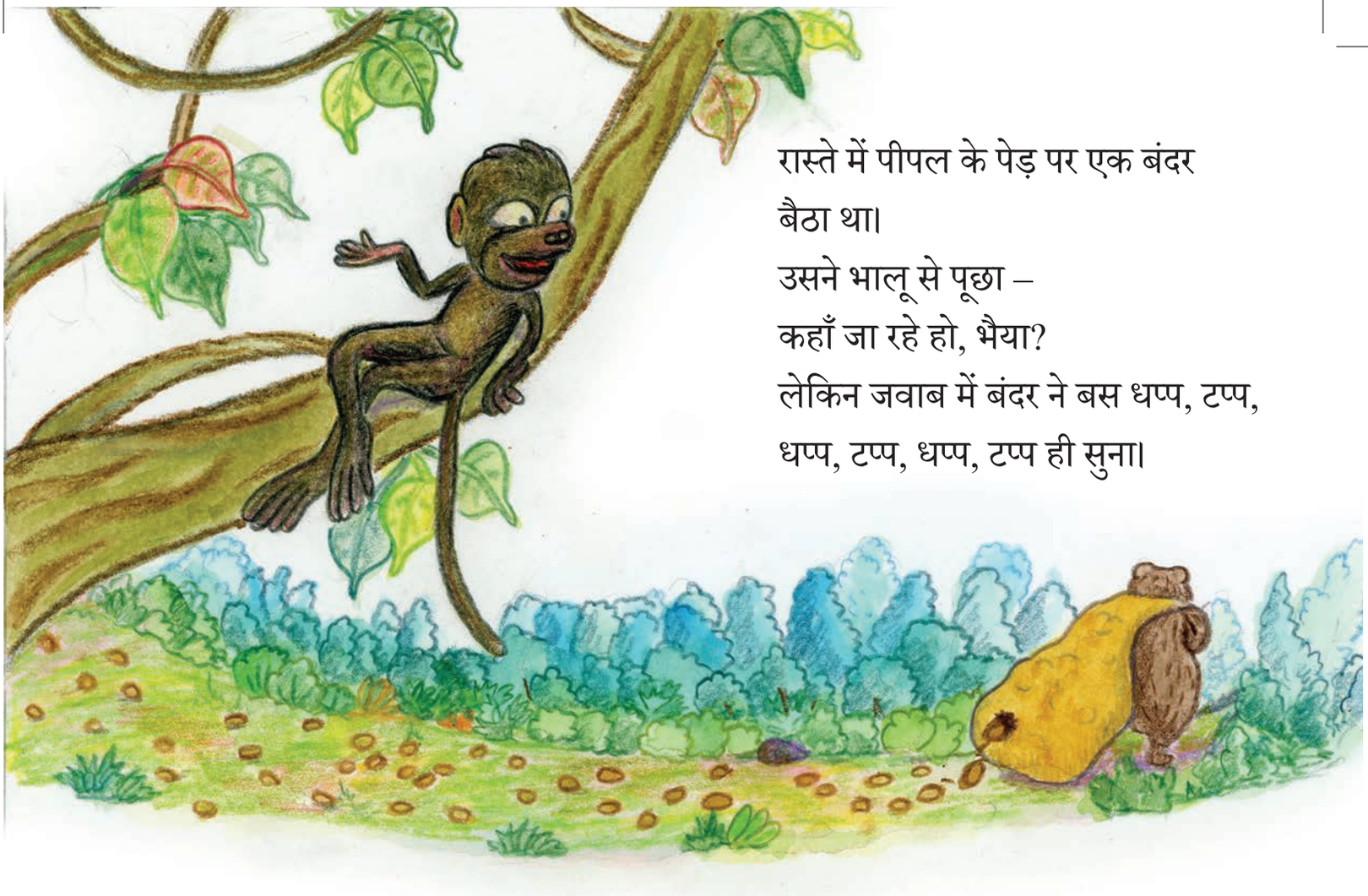

रास्ते में पीपल के पेड़ पर एक बंदर
बैठा था।
उसने भालू से पूछा –
कहाँ जा रहे हो, भैया?
लेकिन जवाब में बंदर ने बस धप्प, टप्प,
धप्प, टप्प, धप्प, टप्प ही सुना।

उसने पेड़ से नीचे देखा। रास्ते में आलू पड़े हुए थे।
यह देखकर बंदर मन ही मन बोला –
भालू चाहे ना बताए, पर मैं पता लगा सकता हूँ।
वह खुश होकर पेड़ से नीचे उतरा।

– चंदन यादव

Firkee 7.indd 5 7/27/2016 9:32:01 AM

बंदर ने कैसे पता लगाया होगा कि भालू कहाँ जा रहा था।

Firkee 7.indd 6 7/27/2016 9:32:03 AM

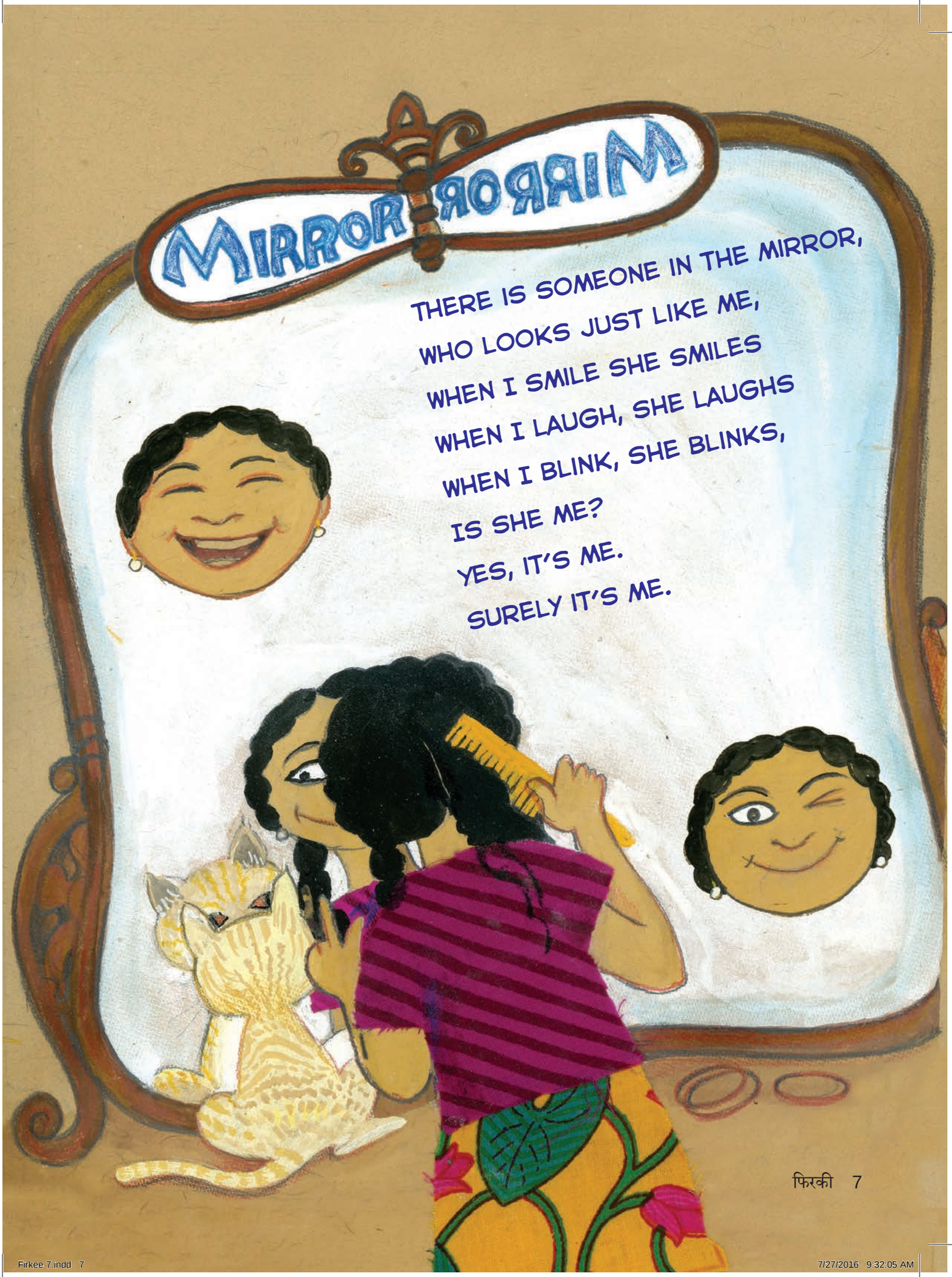

Firkee 7.indd 7 7/27/2016 9:32:05 AM

चित्र हमारे शब्द तुम्हारे

अंक 6 में छपा चित्र

एक बार की बात है, चाँद फल बेच रहा था। वो बेचते - बेचते बहुत दूर तक आ चुका था। उसने सोचा मैं एक साइकिल खरीद लेता हूँ, तो घर जल्दी पहुँच जाऊँगा। फिर वो एक साइकिल की दुकान में गया। उसने दुकानदार से साइकिल का दाम पूछा। दुकानदार बोला, "इस साइकिल का दाम 150 रुपए है"। चाँद ने सोचा इतने पैसे तो मेरे पास हैं ही नहीं। क्यों ना मैं साइकिल के पुर्ज़े खरीद लूँ और साइकिल बना लूँ। चाँद दुकान में गया। उसने दुकानदार से पुर्ज़ों का दाम पूछा। दुकानदार बोला "इसका दाम 111 रुपए है"। फिर चाँद ने साइकिल बनाई। मगर तब तक बहुत रात हो चुकी थी। सुबह होते ही चाँद घर चला गया।

अक्षत आनंद
केंद्रीय विद्यालय
एन. सी. ई. आर. टी. कैंपस
नई दिल्ली

अंक 6 में छपे चित्र पर अक्षत आनंद के द्वारा भेजी कहानी।

Firkee 7.indd 8 7/27/2016 9:32:07 AM

पानी की फूल

सागर का संगीत
हवाएँ गीत गा रही हैं
ये पानी की फूल
मछलियाँ कहाँ जा रही हैं।

जाना था जातीं
मेघों के तांगे से जातीं
नदिया की गाड़ी से
जल्दी वापस आ जातीं।

कुछ तो अता-पता दे जातीं
जहाँ जा रही हैं
ये पानी की फूल
मछलियाँ कहाँ जा रही हैं।

– प्रभात

Firkee 7.indd 9 7/27/2016 9:32:08 AM

'अ' से आम

'अ' से आम
'क' से कलम
एक गयी खो
एक खा गये हम।
'इ' से इमली
'ख' से खटमल
एक गयी मुँह में
एक दिया चल।
'उ' से उल्लू
'ग' से गधा
एक यहाँ था
और एक वहाँ था।
'ऐ' से ऐनक
'घ' से घड़ी
दोनों कुएँ में
गिर पड़ीं।

- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

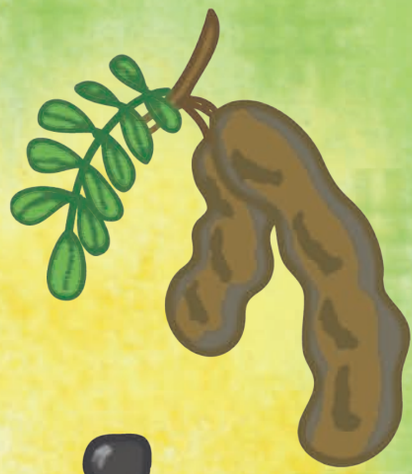

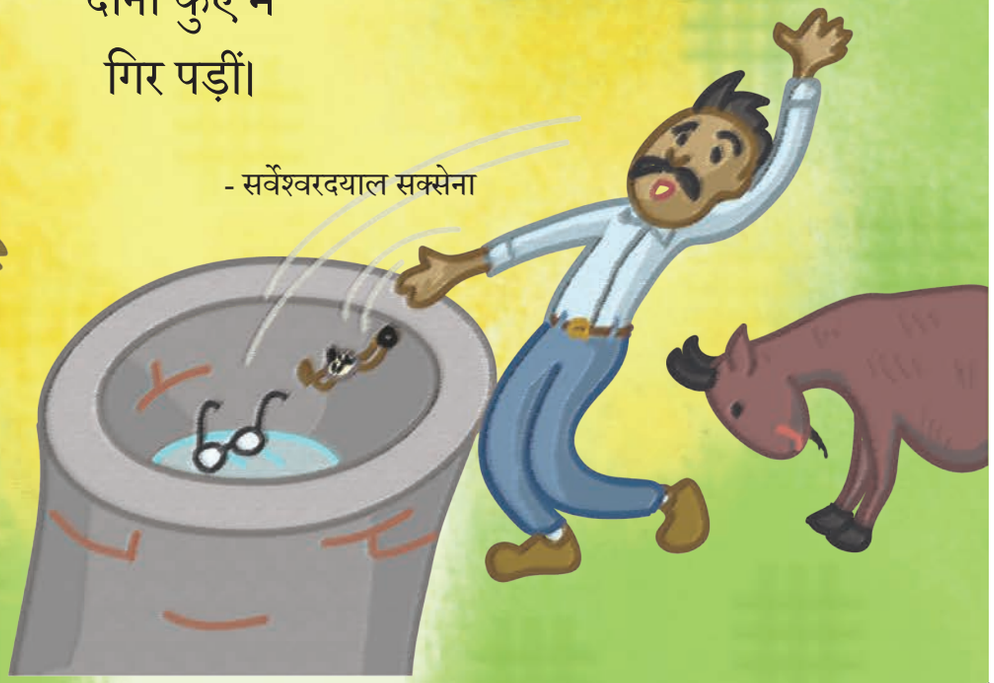

Firkee 7.indd 10 7/27/2016 9:32:13 AM

RIDDLE

1. Hard and brown outside
Soft and white inside
Who am I?

2. You sometimes hear me calling you
You listen to me,
But you actually talk to your friend.
Who am I?

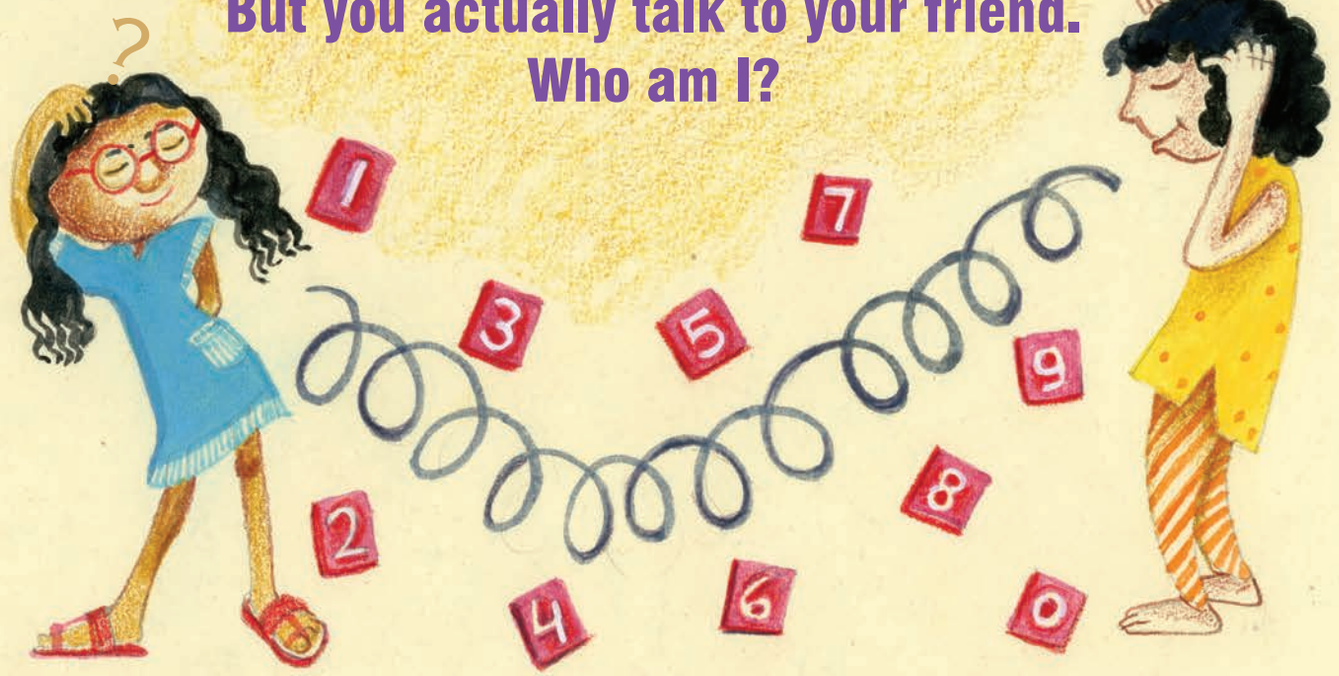

Answer on page 20

Firkee 7.indd 11 7/27/2016 9:32:16 AM

Sea

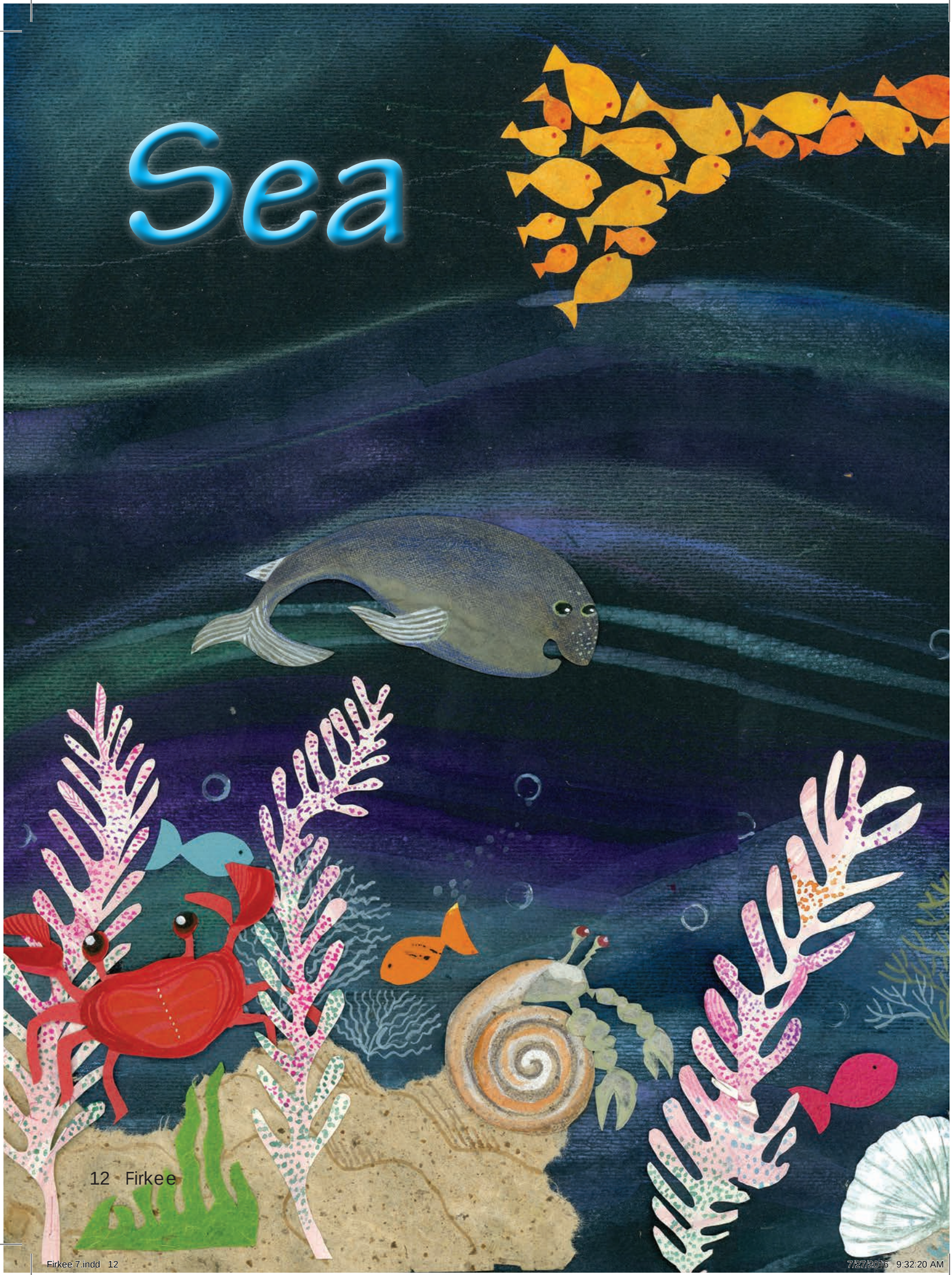

Firkee 7.indd 12 7/27/2016 9:32:20 AM

Firkee 7.indd 13 7/27/2016 9:32:27 AM

What if.....

What if **Elephants** could drive cars?

What if *Chocolates* grew on trees?

What if we could touch the **stars**?

What if we all lived in the seas?

Firkee 7.indd 14 7/27/2016 9:32:30 AM

कुछ हम लिखें, कुछ तुम लिखो !

होती है भई होती है,
राजा जी की मूँछ।
नहीं होती भई नहीं होती,
इन्सानों की पूँछ।

होती है भई होती है,
फूलों में सुगंध।
नहीं होती भई नहीं होती,
हवा कभी भी बंद।

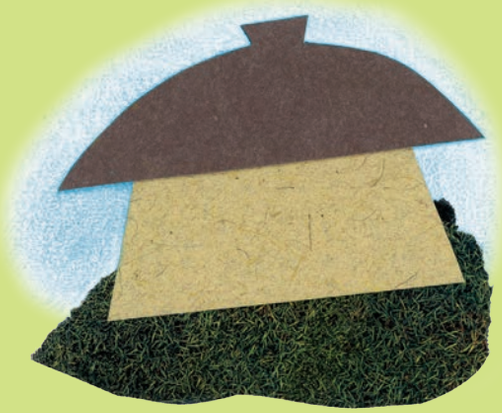

होती है भई होती है,
हर घर में एक .....।
नहीं होती भई नहीं होती,
आसमान में फिरकी।

होती है भई होती है,
.....।
नहीं होती भई नहीं होती
.....।

- मुकेश मालवीय

Firkee 7.indd 15 7/27/2016 9:32:35 AM

समुद्र किनारे...

Firkee 7.indd 16 7/27/2016 9:32:41 AM

साभार – उषा शर्मा

Firkee 7.indd 17 7/27/2016 9:32:48 AM

MADAN AND TOMBA FOUND A NEW THING

Madan and Tomba found a new thing.
Tomba said,

"I know what it is!
It's a boat".

But the boat didn't float.

Madan said,

"I know what it is!
It's a rocket".

They counted...10...9...8...
7...6...5...4...3...2...1.....
SH..O.....O....T.....
But the rocket
didn't take off.

Firkee 7.indd 18 7/27/2016 9:32:49 AM

Tomba said,

"I know what is it!
It's a dambur".

(Dambur is tent in Manipuri.)

Tomba lay down under it,
but the dambur was too small.

Then it started raining and that was when
Madan said,

"I know what it is"!

Madan turned
the new thing
upside down.
It filled with
rain water.

Firkee 7.indd 19 7/27/2016 9:32:50 AM

Then Madan jumped in.

Madan said,

"It's a bathtub".

Tomba said,

"Ohh! Yes, it is"!

Answers to Riddles...

coconut

phone

Firkee 7.indd 20 7/27/2016 9:32:52 AM

मक्खी

गूँ गूँ गूँ गूँ मक्खी बोली,
मेले में मैं जाऊँगी,
चाट मसाला, गोल गप्पे,
भेलपूरी खाऊँगी।
चूँ चूँ चूँ चूँ चिड़िया बोली,
मैं तेरे संग आऊँगी,
आलू टिकिया, गोभी भजिया,
मकईदाना खाऊँगी।
मैं मैं मैं मैं बच्ची बोली,
मैं तेरे संग आऊँगी,
मोटरगाड़ी, गुड़िया प्यारी,
आइसगोला खाऊँगी।

- नयना आडारकार

Firkee 7.indd 21 7/27/2016 9:32:54 AM

तीन खरगोश

तीन खरगोश जंगल में घूमने गए।

तभी एक बाघ ने उन पर हमला कर दिया।

वे तीनों खरगोश डरकर सरपट भागने लगे।
पीछे-पीछे बाघ भी दौड़ा।

Firkee 7.indd 22 7/27/2016 9:32:55 AM

खरगोश एक तालाब के पास पहुँचे।
वहाँ एक हाथी नहा रहा था।

वे दौड़कर हाथी की सूँड़ पर चढ़ते हुए उसके ऊपर बैठ गए।

हाथी ने अपनी सूँड़ में पानी भरकर फव्वारे की तरह बाघ पर फेंका।
बाघ भीगी बिल्ली बन गया।

Firkee 7.indd 23 7/27/2016 9:32:57 AM

देखो, मैंने क्या बनाया !

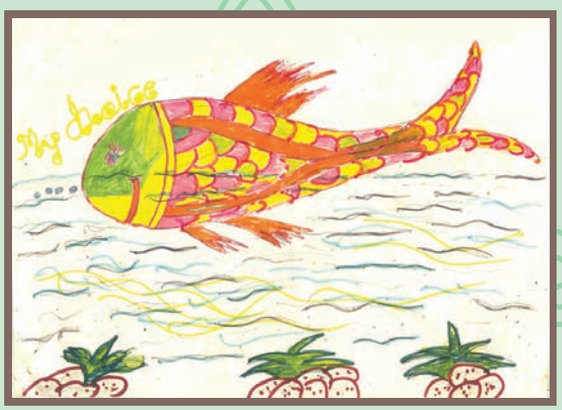

निनामा सरस्वती
विजय नगर, साबरकांठा, गुजरात

निनामा मित्तल
विजय नगर, साबरकांठा, गुजरात

बलेविया स्मित
विजय नगर, साबरकांठा, गुजरात

चौहान राजेन्द्र सिंह
विजय नगर, साबरकांठा, गुजरात

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	दिनेश कुमार
मुख्य संपादक	:	श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	गौतम गांगुली
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	अरुण चितकारा
संपादक	:	रेखा अग्रवाल
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	जहान लाल

सर्वाधिकार सुरक्षित

» प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

» इस दस्तावेज की आंशिक या समग्र रूप से समीक्षा, सारांश, पुनः उत्पादन अथवा अनुवाद किया जा सकता है लेकिन इसे न तो विक्रय के लिए और न ही किसी व्यावसायिक उद्देश्य के लिए उपयोग में लाया जाए।

» इस पत्रिका की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पत्रिका अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

संपादन मंडल

शैक्षणिक संपादक - उषा शर्मा

संपादन मंडल - मीनाक्षी खार, कीर्ति कपूर, ज्योत्स्ना तिवारी, डी. के. शिंदे, वरदा निकालजे, श्वेता उप्पल, संध्या सिंह

सहयोग - नन्दिता भारती, विनीता अरोड़ा, सोनिका कौशिक

साज-सज्जा - गीतांजलि सागर

सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं के लिए संपर्क करें-

उषा शर्मा एवं मीनाक्षी खार (कार्यकारी संपादक)
प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम
कक्ष संख्या 307, तीसरी मंज़िल, जी. बी. पंत ब्लॉक
एन. सी. ई. आर. टी., श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110016
दूरभाष- 01126863735
ईमेल- readingcell.ncert@gmail.com

PD 1T RA

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2015

100 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा पुष्पक प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, 203-204 डी. एस. आई. डी. सी. शेड्स, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-I , नयी दिल्ली 110 020 द्वारा मुद्रित।

ISBN

21077

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016

₹ 25.00

Firkee 7.indd 24 7/27/2016 9:32:58 AM